PHILOSOPHY

Hons., Paper III (Part-III)

Liberty (स्वतंत्रता)

Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449957

→ सामाजिक-राजनीतिक दर्शन में एक महत्वपूर्ण आदर्श के रूप में स्वतंत्रता का भी स्थान है। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास एवं समाज को समुचित प्रगति हेतु स्वतंत्रता का होना आवश्यक है। समानता जहाँ समाजवादी विचारधारा का केन्द्रीय तत्त्व है, वहीं उदारवादी विचारधारा स्वतंत्रता पर विशेष जोर देती है।

→ स्वतंत्रता अंग्रेजी शब्द 'लिबर्टी' (Liberty) का हिन्दी रूपान्तर है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द लिबर (Liber) से हुई है। 'लिबर' का अर्थ है - मुक्ति अर्थात बंधनों का अभाव। परन्तु यहाँ स्वतंत्रता का अर्थ बंधनों का पूर्ण अभाव तथा सकारात्मक नहीं है। बंधनों का पूर्ण अभाव तो वस्तुतः स्वेच्छाचारिता (Licence) या अराजकता है और स्वेच्छाचारिता की स्थिति में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' की स्थिति और 'मत्स्य-न्याय' उत्पन्न होगी। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः उसे अपने अधिकार का प्रयोग करते समय दूसरे लोगों के अधिकारों का भी ध्यान रखना पड़ता है।

→ प्रत्येक मनुष्य वह करने को स्वतंत्र है जिसे वह करने की इच्छा करता है, यदि वह किसी दूसरे मनुष्य की समान स्वतंत्रता का हनन नहीं करता हो।

→ स्वतंत्रता के संबंध में दो दृष्टिकोण प्रमुख दृष्टिकोण हैं - नकारात्मक स्वतंत्रता और सकारात्मक स्वतंत्रता। उदारवाद के प्रारंभिक विचारक स्वतंत्रता को नकारात्मक मानते थे तथा वे इसे बन्धनों के अभाव के रूप में देखते थे। 18वीं शताब्दी के बाद उदारवादियों ने स्वतंत्रता की सकारात्मक धारणा का विकास किया।

(i) नकारात्मक स्वतंत्रता (Negative Liberty):- प्रारंभिक या शास्त्रीय उदारवादियों के सिद्धान्त और व्यवस्था में स्वतंत्रता की जिस धारणा का जन्म हुआ उसे नकारात्मक स्वतंत्रता कहा गया। लॉक, एडम स्मिथ, पेन, स्पेंसर तथा मिल जैसे शास्त्रीय उदारवादियों ने स्वतंत्रता के नकारात्मक पक्ष पर ही बल दिया है। ये विचारक स्वतंत्रता का अर्थ 'लिबर्टी' के मूल शब्द 'लिबर' से ग्रहण करते हैं। 'लिबर' का अर्थ है - बंधनों का न होना अर्थात बंधनों का अभाव। यहाँ 'बंधनों के अभाव' का आशय है - स्वतंत्रता किससे (Freedom from), न कि स्वतंत्रता किसके लिये (Freedom to)। ये बन्धन आर्थिक, राजनीतिक

Scanned with CamScanner

धार्मिक, नैतिक - सभी माने गये। राजनीतिक स्तर पर इसका अर्थ था राज्य की मनमानी शक्ति पर बन्धन, समाज के आर्थिक और सामाजिक कार्यों में राज्य का हस्तक्षेप तथा न्यूनतम राज्य का विचार। आर्थिक स्तर पर स्वतंत्रता का अर्थ था - अबंध नीति (Laissez faire) अर्थात व्यक्ति को आर्थिक मामलों में स्वतंत्र छोड़ देना व कोई हस्तक्षेप नहीं करना।

(ii) सकारात्मक स्वतंत्रता (Positive Liberty) :- व्यक्तिवाद पर आधारित पूँजीवाद की बुराईयों के विरोधस्वरूप एवं समाजवाद के दबाव में इस सकारात्मक स्वतंत्रता की अवधारणा का विकास हुआ है। यह अवधारणा स्वतंत्रता को समाज, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों, अधिकार, समानता और न्याय के साथ जोड़ती है। इसमें स्वतंत्रता के नकारात्मक स्वरूप की कमियां से उबरने का प्रयास दिखता है। टी० एच० ग्रीन, लास्की, बोसांके, मैकफर्सन, रॉल्स आदि इसके समर्थक हैं। इनके अनुसार- स्वतंत्रता एक बहुत अच्छी बात है किन्तु यदि स्वतंत्रता के नाम पर अनुचित कार्यों को करने की छूट दे दी जाये तो 'स्वतंत्रता' और 'स्वेच्छाचार' में कोई भेद नहीं होगा। वास्तविक स्वतंत्रता सकारात्मक होती है, जिसका अर्थ है - "वांछनीय (desirable) कार्यों को करने की सुविधा"। यही कारण है कि ग्रीन और लास्की स्वतंत्रता का अभिप्राय 'बंधनों का अभाव' नहीं मानते, बल्कि 'सुअवसरों का होना' मानते हैं।

→ स्पष्ट है कि सकारात्मक स्वतंत्रता प्रतिबंधों के पूर्ण अभाव के बजाय समुचित प्रतिबंध की बात करता है, साथ ही मनुष्यों के सम्पूर्ण विकास के अवसर उपलब्ध कराने पर जोर देता है। सकारात्मक स्वतंत्रता का अर्थ है - स्वतंत्रता किसके लिये (freedom to) अर्थात उन सभी परिस्थितियों की उपस्थिति जो व्यक्ति के स्वतंत्र और संपूर्ण विकास के लिये आवश्यक हैं तथा जिन्हें सुरक्षित रखना राज्य का कर्तव्य है।

→ स्वतंत्रता का लक्ष्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वोच्च विकास होता है, और यदि राज्य इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु श्रम, शिक्षा और स्वास्थ्य आदि के सम्बन्ध में नियमों की व्यवस्था करता है तो इससे व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित नहीं होती, वरन उसमें वृद्धि ही होती है।

→ आधुनिक समय में राज्य के कार्यक्षेत्र के सम्बन्ध में सर्वाधिक प्रमुख रूप से मान्य 'लोककल्याणकारी राज्य' की धारणा इसी स्वतंत्रता के विचार पर आधारित है।

Scanned with CamScanner